प्रदूषण : समस्या और समाधान

रूपरेखा

- ★ **प्रस्तावना**
- ★ **प्रदूषण के प्रकार**
- ★ **प्रदूषण पर नियन्त्रण**
- ★ **उपसंहार**

प्रस्तावना – जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक संतुलित वातावरण की आवश्यकता होती है। सन्तुलित वातावरण में प्रत्येक घटक एक निश्चित मात्रा में उपस्थित रहता है। कभी-कभी वातावरण यह संतुलन बिगड जाता है। परिणामतः वातावरण दूषित हो जाता है ; जो जीवधारियों के लिए किसी - न - किसी रूप में हानिकारक सिद्ध होता है । इसे ही प्रदूषण कहते हैं।

प्रदूषण के प्रकार - प्रदूषणों के कुछ प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं -

1) **वायु प्रदूषण** – वायुमण्डल मे मौजूद गैसें एक विशेष अनुपात में अपनी क्रियाओं द्वारा वायुमण्डल में ऑक्सीजन और कार्बन डाइ - ऑक्साइड का सन्तुलन बनाए रखती हैं , किन्तु मनुष्य अपनी अज्ञानता के कारण तथा आवश्यकता के नाम पर इस सन्तुलन को बिगाड़ता रहता है । अपनी आवश्यकता के लिए मनुष्य वनों को काटता है , परिणामतः वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा कम होती जा रही है । मिलों की चिमनियों से निकलनेवाले धुएँ के कारण वातावरण में विभिन्न प्रकार की हानिकारक गैसें बढ़ती चली जा रही हैं । कोयले और तेल के जलने से सल्फर डाइऑक्साइड गैस उत्पन्न होती है । यह गैस वायु में पहुंचने पर वर्षा या नमी के साथ घुलकर धरती पर पहुँचती है और गन्धक का अम्ल बनाती है । यह नासिका में जलन पैदा करती है।

Gyansindhu Classes

2) **जल प्रदूषण -** जल में अनेक प्रकार के खनिज तत्त्व , कार्बनिक - अकार्बनिक पदार्थ तथा गैसे रहती हैं । यदि जल में इन पदार्थों की मात्रा असन्तुलित हो जाती है तो जल प्रदूषित होकर हानिकारक हो जाता है। आज हम नदियों में

मिलों का कचरा , मल - मूत्र आदि प्रवाहित करते हैं । इसके फलस्वरूप हमारे देश को अधिकांश नदियों का जल प्रदूषित होता जा रहा है।

3) **रेडियोधर्मी प्रदूषण** - परमाणु शक्ति उत्पादन केन्द्रों में विभिन्न परीक्षण से भी जल, वायु तथा पृथ्वी का प्रदूषण होता है, जो आज के लिए ही नही बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी हानिकारक है । परमाणु विस्फोट से सम्बद्ध स्थान का तापक्रम इतना अधिक हो जाता है कि धातु तक पिकल जाती है। विस्फोट के समय उत्पन्न रेडियोधर्मी पदार्थ वायुमण्डल की बाह्य परतों में प्रवेश कर जाते हैं , जहाँ पर ये ठण्डे होकर संघनित अवस्था में बूंदों का रूप ले लेते हैं और वायु के झोंकों के साथ समस्त संसार में फैल जाते हैं ।

4) **ध्वनि प्रदूषण -** अनेक प्रकार के वाहनों ; क्या – मोटरकार, विमान, ट्रैक्टर आदि तथा लाउडस्पीकर, बाजे, कारखानों के साइरन और मशीन से भी ध्वनि प्रदूषण होता है । अधिक तेज ध्वनि से मनुष्य को सुनने की शक्ति का ह्रास, अनिद्रा, कभी - कभी पागलपन का रोग भी उत्पन्न हो जाता है ।

<u>प्रदूषण पर नियन्त्रण -</u> प्रदूषण को रोकने के लिए व्यक्तिगत और सरकारी दोनों ही स्तरों पर पूरे प्रयास आवश्यक है। जल प्रदूषण के निवारण एवं नियम के लिए भारत सरकार ने सन् 1974 ई ० में ' जल प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण अधिनियम ' लागू किया है । इसके अन्तर्गत एक केन्द्रीय बोर्ड के सभी प्रदेशों में ' प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड ' गठित किए गए हैं ।

उद्योगों के कारण उत्पन्न होनेवाले प्रदूषण को रोकना होगा, औद्योगिक कचरे के निस्तारण की समुचित व्यवस्था करनी होगी धुएँ तथा अन्य प्रदूषणों के समुचित ढंग से निष्कासन और उसकी व्यवस्था का भी दायित्व लेना होगा। वनों की अनियन्त्रित कटाई पर रोक के लिए कठोर नियम बनाए गए हैं, उन्हे और कठोर किया जाए।

Gyansindhu Classes

<u>उपसंहार -</u> पर्यावरण के प्रति जागरूकता से ही हम भविष्य में और अधिक अच्छा एवं स्वस्थ जीवन जी सकेंगे और आनेवाली पीढ़ी को प्रदूषण के अभिशाप से मुक्ति दिला

सकेंगे; अत: सरकार के साथ -साथ हम सभी का भी यह पावन कर्तव्य बन जाता है कि हम प्रदूषण - मुक्त पर्यावरण तैयार करने की दिशा में जागरूक रहे ।

Gyansindhu Classes